INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR:7.816(2021); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:8(1), August 2021
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in
Digital certificate of publication: http://ijmer.in/pdf/e-Certificate%20of%20Publication-IJMER.pdf
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FFA2A
Article Received: 4th August
Publication Date:30th August 2021
ijmer.in.doi/2021/10.08.17

पिक्षण प्रभावपीलता एवं संवेगात्मक बुद्धि में संबंध : साहित्य अवलोकन

ज्योति गुप्ता, डॉ० चंदना डे
पोधार्थी, प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
पिक्षाशास्त्र विभाग
ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय, लखनऊ

अध्ययन में 'पिक्षण प्रभावपीलता एवं संवेगात्मक बुद्धि में संबंध : साहित्य अवलोकन' किया जा रहा है क्योंकि किसी भी अनुसंधान [illegible] व महत्वपूर्ण कार्य सम्बन्धित साहित्य का संवेक्षण है क्योंकि यह पोधार्थी को नवीनतम ज्ञान के पिछले पर ले जाता है, [illegible] क्षेत्र से सम्बन्धित तथ्यों, आंकड़ों एवं परिणामों के मूल्यांकन करने का अवसर प्राप्त होता है तथा यह ज्ञात होता है कि [illegible] क्षेत्र में कहाँ रिक्तियाँ हैं, कहाँ निष्कर्ष विरोध है एवं कहाँ अनुसंधान की आवश्यकता है। प्रस्तुत पोध में पोधार्थी द्वारा सम्बन्धित [illegible] संवेक्षण की उपयोगिता एवं महत्व को ध्यान में रखकर पुस्तकों, पोधलेखों, एवं प्रकाशित व अप्रकाशित पोध ग्रन्थों आदि का सूक्ष्म [illegible] अध्ययन किया गया है।

[illegible] पिक्षण प्रभावपीलता, संवेगात्मक बुद्धि

[illegible]–जीवन के परिष्कार एवं विकास की प्रक्रिया है। पिक्षा मनुष्य की आन्तरिक शक्तियों का सर्वांगीण विकास अर्थात् शरीर, मन [illegible] आत्मा का विकास है। पिक्षा का सम्बन्ध जितना व्यक्ति से है, उससे अधिक समाज से है। मनुष्य जीवन में जो भी अर्जित [illegible] वह पिक्षा का ही परिणाम है। व्यक्ति का चरित्र, व्यक्तित्व, संस्कृति, मिलन, सुख दुख, कुशलता, आदतें तथा जीवन की छोटी [illegible] बातें पिक्षा पर निर्भर हैं। वास्तव में पिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा मानव–शिशु विकसित होकर समाज में उपयुक्त स्थान [illegible] है। पिक्षा के माध्यम से सहस्त्रों वर्षों से समाज द्वारा अर्जित अनुभव बालक को हस्तान्तरित किए जाते हैं। पिक्षा के माध्यम [illegible] बालक का शारीरिक, मानसिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास होता है। पिक्षा के द्वारा ही उसके चरित्र का निर्माण होता है, [illegible] समाजीकरण होता है और वह मनुष्य की संज्ञा पाने योग्य बनता है।

[illegible] उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए समाज विद्यालयों का संगठन करता है। विद्यालय की संकल्पना में विद्यालय भवन, पाठ्यवस्तु, [illegible] क्रियाएँ, पाठ्यपुस्तकें आदि सभी वस्तुएँ पैक्षिक कार्यक्रम में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं, परन्तु जब तक इन में प्रभावी [illegible] जीवन–पक्षिप्रधान नहीं की जाएगी, तबतक ये निरर्थक ही रहेंगी। पिक्षक के व्यक्तित्व एवं कार्य–कुशलता का प्रत्यक्ष प्रभाव [illegible] के मानस पटल पर पड़ता है। ये पिक्षार्थी ही भविष्य के निर्माता होते हैं। यदि यह कहा जाए कि किसी भी राष्ट्र के निर्माण में [illegible] का योगदान प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से होता है तो यह कहना मिथ्या नहीं होगा। प्रसिद्ध पिक्षाशास्त्री जॉन एडमस व जॉन [illegible] को पिक्षा प्रक्रिया का अभिन्न अंग मानते हैं क्योंकि पिक्षक ही विद्यार्थियों अधिगम के लिए प्रेरित करता है और वांछित लक्ष्य [illegible] करते हैं। पिक्षा की प्रक्रिया एक अंतर्वैयक्तिक प्रक्रिया है जिसमें विद्यार्थी एवं पिक्षक के मध्य अंतःक्रिया होती है। इस [illegible] के दौरान दोनों के न केवल बौद्धिक गुण अपितु संवेगात्मक व्यवहार भी एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। ऐसे में यह जानने [illegible] है कि पिक्षकों की पिक्षण प्रभावपीलता एवं संवेगात्मक बुद्धि के मध्य क्या संबंध है? प्रस्तुत अध्ययन में 'पिक्षण [illegible] एवं संवेगात्मक बुद्धि में संबंध : साहित्य अवलोकन' किया जा रहा है।

अवलोकन

[illegible] ने 2006 में माध्यमिक विद्यालय के पिक्षकों की कृत्य–संतुष्टि व पिक्षण प्रभावपीलता का उनकी संवेगात्मक बुद्धि के सम्बन्ध में [illegible]। पोध समस्या का समाधान के लिए वर्णनात्मक संवेक्षण विधि का उपयोग किया गया। प्रतिदर्श के रूप में उत्तर प्रदेश के [illegible] में स्थित माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत 300 पिक्षकों का चयन किया गया। अध्ययन में पाया गया कि– 1 23 प्रतिशत [illegible] विद्यालय के पिक्षकों की पिक्षण प्रभावपीलता का स्तर उच्च, 60 प्रतिशत माध्यमिक विद्यालय के पिक्षकों की पिक्षण प्रभावपीलता [illegible] व 17 प्रतिशत माध्यमिक विद्यालय के पिक्षकों की पिक्षण प्रभावपीलता का स्तर निम्न पाया गया। माध्यमिक विद्यालय के [illegible] व महिला पिक्षक की पिक्षण प्रभावपीलता के स्तर में अन्तर है। पुरुष पिक्षक, महिला पिक्षकों की तुलना कम प्रभावी पाए [illegible] माध्यमिक विद्यालय के पिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का स्तर मध्यम पाया गया तथा माध्यमिक विद्यालय के पुरुष पिक्षक व [illegible] की संवेगात्मक बुद्धि के स्तर में अन्तर नहीं है। 3 माध्यमिक विद्यालय के पिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि व पिक्षण